Meaning and Definition of Teaching

शिक्षण की अवधारणा काफी व्यापक एवं विस्तृत है। एक साधारण शब्दों में शिक्षक द्वारा अपनाये गये व्यवसाय अथवा किसी व्यक्ति विशेष को कुछ सिखाने या ज्ञान देने, कौशल, रुचियाँ और अभिवृत्तियों को प्राप्त करने में दी जाने वाली सहायता से लिया जाता है।

शिक्षण को एक साधारण शब्दों में बताने वाली परिभाषा नहीं कहा जा सकता। शिक्षण एक बहुत ही जटिल सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक प्रक्रिया है। शिक्षण का यह बदलता स्वरूप शिक्षण की परिभाषा में लगातार बदलाव ला रहा है। शिक्षण के अर्थ को हम Mainly Three types में Divide करते हैं।

(1) एकतन्त्र में शिक्षण का अर्थ → (Autocracy Teaching) शिक्षक प्रधान classes और शिक्षक कक्षा में अपना शासन राज्य तानाशाह के रूप में चलाता है।

(2) लोकतन्त्र में शिक्षण का अर्थ → (Democratic) छात्र और शिक्षक दोनों की सक्रिय भूमिका तथा वाचिक-अशाब्दिक अन्तः क्रिया चलती रहती है। कक्षा में तर्क करना, प्रश्न करने, उत्तर पाने, वार्तालाप के अनेक अवसर मिलते हैं। छात्र और शिक्षक एक-दूसरे के व्यक्तित्व को प्रभावित करने का प्रयत्न करते हैं।

(3) हस्तक्षेप रहित शासन में शिक्षण का अर्थ - (Meaning of Teaching in Laissez-Faire) → शिक्षक की भूमिका एक मित्र के रूप में, छात्र अधिक सक्रिय, अधिक से अधिक अवसर प्रदान करने बच्चों की समस्यायें सुलझाने के लिए। छात्रों की क्रियायों में हस्तक्षेप न करना बल्कि उनके विकास में सहायता करना। (Teacher as a Facilitator)

Definitions of Teaching :→

(1) Acc to Psychological and Psychoanalytical Terms → दूसरे को सीखने में मदद करने की प्रक्रिया को शिक्षण कहते हैं।

(2) The Little Oxford Dictionary → "ज्ञान प्रदान करना, स्किल का विकास करना, अनुदेशन देना, पाठ पढ़ाना तथा उन्हें उत्साहित करना शिक्षण का अर्थ है।"

(3) Skinner - "शिक्षण पुनर्बलन की Contingencies का क्रम है।"

(4) Ryans - " दूसरों को सीखने के लिए दिशा निर्देश देने तथा अन्य प्रकार से उन्हें निर्देशित करने की प्रक्रिया को शिक्षण कहा जाता है।"

Nature and characteristics of Teaching

(1) शिक्षण एक जटिल सामाजिक प्रक्रिया है।
(2) शिक्षण एक कला तथा विज्ञान दोनों है।
(3) शिक्षण एक व्यावसायिक क्रिया है।
(4) शिक्षण एक कौशल युक्त क्रिया है।
(5) शिक्षण मार्गदर्शन करता है।
(6) शिक्षण अध्यापक के परिश्रम का परिणाम है।
(7) शिक्षण के दो अंग है (i) सीखने वाला
(ii) सिखाने वाला
(8) शिक्षण का कार्य ज्ञान प्रदान करना है।
(9) शिक्षण उपचारात्मक तथा निदानात्मक दोनों है।
(10) शिक्षण प्रगतिशील क्रिया है।
(11) शिक्षण छात्रों के पूर्व ज्ञान पर आधारित होता है।
(12) अच्छे शिक्षण में शिक्षक के व्यवहार में स्थायित्व तथा स्पष्टता होती है।
(13) अच्छा शिक्षण छात्र तथा शिक्षकों के सहयोग पर आधारित होता है।
(14) एक अच्छे शिक्षण से छात्र व शिक्षक सम्बन्ध मधुर होते है।
(15) एक अच्छा शिक्षण छात्रों को वातावरण से अनुकूलन करने में सहायता देता है।

शिक्षण के प्रकार

(1) शिक्षण के उद्देश्यों का दृष्टिकोण -
   (i) ज्ञानात्मक शिक्षण
   (ii) भावात्मक शिक्षण
   (iii) क्रियात्मक शिक्षण

(2) शिक्षण स्तरों का दृष्टिकोण -
   (i) स्मृति स्तर (Memory level)
   (ii) बौद्धिक स्तर (Understanding level)
   (iii) चिन्तन स्तर (Reflective level)

(3) शिक्षण संरचना का दृष्टिकोण -
   (i) वर्णनात्मक शिक्षण
   (ii) उपचारात्मक शिक्षण

(4) शिक्षण व्यवस्था का दृष्टिकोण -
   (i) औपचारिक शिक्षण (Formal Teaching)
   (ii) अनौपचारिक शिक्षण (Informal Teaching)
   (iii) अर्द्धऔपचारिक शिक्षण (Semi-formal Teaching)

(5) शिक्षण क्रियाओं का दृष्टिकोण -
   (i) प्रस्तुतीकरण से सम्बन्धित शिक्षण
   (ii) प्रदर्शन से सम्बन्धित शिक्षण
   (iii) कार्य से सम्बन्धित शिक्षण

(6) प्रशासन के अनुसार शिक्षण -
   (i) एकतान्त्रिक शिक्षण
   (ii) लोकतान्त्रिक शिक्षण
   (iii) हस्तक्षेप - रहित शिक्षण

phases of Teaching

Accn to Jackson, It will divide into three parts

(1) पूर्व क्रिया अवस्था (Pre-active stage)
(2) अन्तः क्रिया अवस्था (Inter-active stage)
(3) उत्तर क्रिया अवस्था (Post-active stage)

(1) Pre-active stage →

शिक्षण
- Pre-active stage
- Inter-active stage
- Post-active stage

Pre-active stage (नियोजन)
- शैक्षिक उद्देश्य निर्धारित करना
- शिक्षण योजना बनाना, युक्तियों का चयन करना etc.

Inter-active stage- (लागू करना)
- पाठ के प्रस्तुतीकरण व पाठ की क्रियाशीलता से सम्बन्धित सारी क्रियायें
- अध्यापक-विद्यार्थी सम्बन्धी क्रिया में एवं प्रतिक्रियायें।

Post-active stage → (मूल्यांकन करना)
- विद्यार्थियों का मूल्यांकन करना
- शिक्षण की प्रतिपुष्टि (feedback)

(1) Pre-active stage :- also called Teaching Planning stage or Planing stage also called conceptulise / प्रत्यात्मक stage: ज्ञान प्रदान करने के लिए शिक्षण की योजना बनाना पढ़ाने की तैयारी करना / सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन / दूसरों से विचार - विमर्श आदि - main operations of this stage →

(i) शैक्षिक उद्देश्यों का निर्माण व निर्धारण (Fixation of Goals) :→

दो चरण

a) विद्यार्थियों के पूर्व व्यवहार के रूप में Entering (Behaviour) →

(b) विद्यार्थियों के अंतिम व्यवहार के रूप में: (Terminal Behaviour) →

(ii) पाठ्य वस्तु का चुनाव →
(Selection of contents) →
पाठ्य वस्तु की प्रकृति, स्वरूप, स्तर, levels of student & age mind में रखना। पूर्व ज्ञान किस प्रकार का है, किस level तक Motivate करना, किस प्रकार evaluation करना है।

(iii) प्रस्तुतीकरण के लिए पाठ्य-वस्तु के अंशों को क्रमबद्ध व्यवस्था करना (Arranging the elements of content for presentation) →
पाठ्य-वस्तु को कैसे तथा किस शैली से पढ़ायें। इसमें teacher को main शिक्षा का स्थानांतरण (Transfer of learning) का तथा मनोविज्ञान का ज्ञान होना अनिवार्य है।

(iv) शिक्षण युक्तियों सम्बन्धी निर्णय लेना- (Decision making about teaching strategies) according to levels of students choose विधियों व प्रविधियाँ। इनका योग्य चयन ही विद्यार्थियों के मस्तिष्क में पाठ्य-वस्तु को स्थिर बना सकता है।

(v) शिक्षण युक्तियों का विभाजन करना → (Distribution of teaching strategies) → यह सुनिश्चित करना कि शिक्षण समय में किन-2 विधियों का कब व कैसे प्रयोग करेगा। eg → कब व कैसे प्रकार के Qu. पूछेगा। Teaching aids का कब प्रयोग करेगा। कब lecture method use करेगा। कब Demostration use करेगा। कब Chalk board use करेगा।

(2) अन्तः क्रिया अवस्था (Inter-active stage)

वास्तविक अध्ययन का जन्म। प्रयोग नियोजन का व्यावहारिक रूप।

all activities which are used by teacher after entering into the classrooms. This stage is also called Implementation stage. Divide it into 3 steps

a) प्रत्यक्षीकरण (Perception) →
b) निदान (Diagnosis) →
c) प्रतिक्रियात्मक प्रक्रियायें (Reactive Process) →

other steps →

(i) कक्षा - आकार की अनुभूति (sizing up the class) →

(ii) छात्रों का निदान

(iii) क्रिया अथवा उपलब्धि या निष्पत्ति कार्य → (Achievements operations) →

(3) उत्तर क्रिया अवस्था (Related to Evaluation) → (Post-active stage)

main operations

(i) शिक्षण द्वारा व्यवहार परिवर्तन के वास्तविक रूप की परिभाषा →

Designing the Exact dimensions of Behavioural changes →

शिक्षण से पहले तथा बाद में बच्चों का व्यवहार note करना। शिक्षक उद्देश्यों की सफलता देखकर यह पता चल जाता है कि शिक्षक कितना सफल हुआ है या नहीं। यदि नहीं तो वह शिक्षक की असफलता की तरफ संकेत करती है।

(ii) मूल्यांकन की उपयुक्त प्रविधियों का चयन - Select appropriate devices and techniques of evaluation →

मूल्यांकन करते समय ऐसी techniques का choosement किया जाना चाहिये जो भावात्मक, ज्ञानात्मक तथा गत्यात्मक (Affective, Knowledge Psychomotor) पक्षों का भी सही मूल्यांकन कर सके।

(iii) प्राप्त परिणामों से शिक्षण नीतियों में परिवर्तन (Changing the strategies in terms of Evidence Gathered) →

बच्चों से जानकारी प्राप्त करने के बाद Teaching में Change करना।

Importance of Teaching operations

शिक्षण क्रियाओं का महत्व →

(1) शिक्षक को दिशा - निर्देश देना कक्षा में जाने से पूर्व तथा कक्षा में जाने के बाद क्या करना चाहिये।

(2) शिक्षण क्रियायें, शिक्षण चरों के स्वरूप को समझने में helpful होती हैं।

(3) शिक्षण - अधिगम प्रक्रिया में अटूट सम्बन्ध स्थापित होता है।

(4) शिक्षण प्रक्रिया की प्रभावशीलता बढ़ाई जा सकती है।

(5) मूल्यांकन के बारे में उचित विधियों का विस्तार से बताना।

(6) यह क्रियायें सूक्ष्म मॉडलों के प्रयोग को बढ़ाती हैं।

(7) अधिगम का सेवारत (Inservice) शिक्षक भी लाभ उठा सकता है। इन क्रियाओं का ज्ञान प्राप्त कर शिक्षण कौशल का विकास करते हैं।

Teaching (शिक्षण)

शिक्षा की दुनिया में हम शिक्षण के बहुत सारे concepts के बारे में पढ़ते हैं।

e.g. अनुबन्धन (Conditioning)
प्रशिक्षण (Training)
अनुदेशन (Instruction)
प्रतिपादन (Indoctrination)

इन सभी शब्दों को कभी-2 हम शिक्षण का भी पर्यायवाची मानने की भी भूल कर देते हैं।
But ये सारे concepts different हैं।

But अगर हम Reality में देखते हैं तो ये सारे शिक्षण को ही प्रकट करते हैं।
इन सभी concepts का main motive
छात्र विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन लाना है।
परिवर्तन का ये कार्य दो तरीकों से होता है।

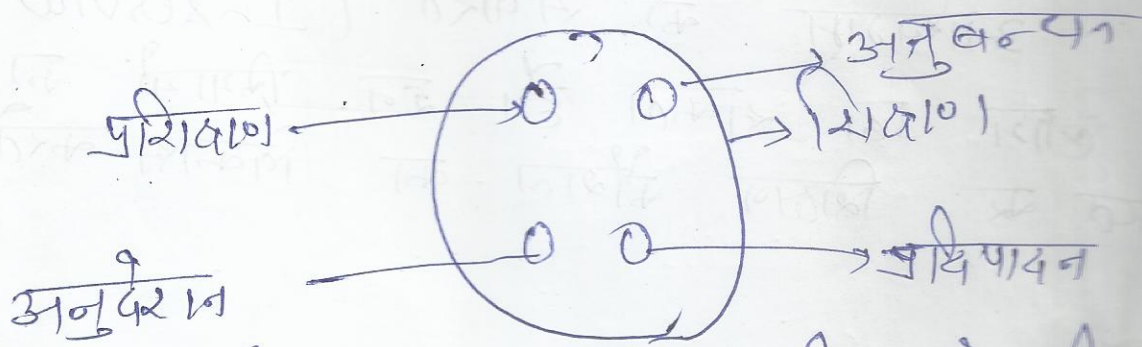

i) विद्यार्थियों को यह शिक्षा दी जाये कि किसी कार्य को कैसे किया जाना है। अथवा किसी उद्दीपन (stimulus) के प्रति अनुक्रिया (Response) कैसी देनी है

(2) विद्यार्थियों को ऐसी शिक्षा दी जाये जिससे उनके ज्ञान में वृद्धि हो तथा कुछ मान्यताओं और मूल्यों का विकास हो जाये।

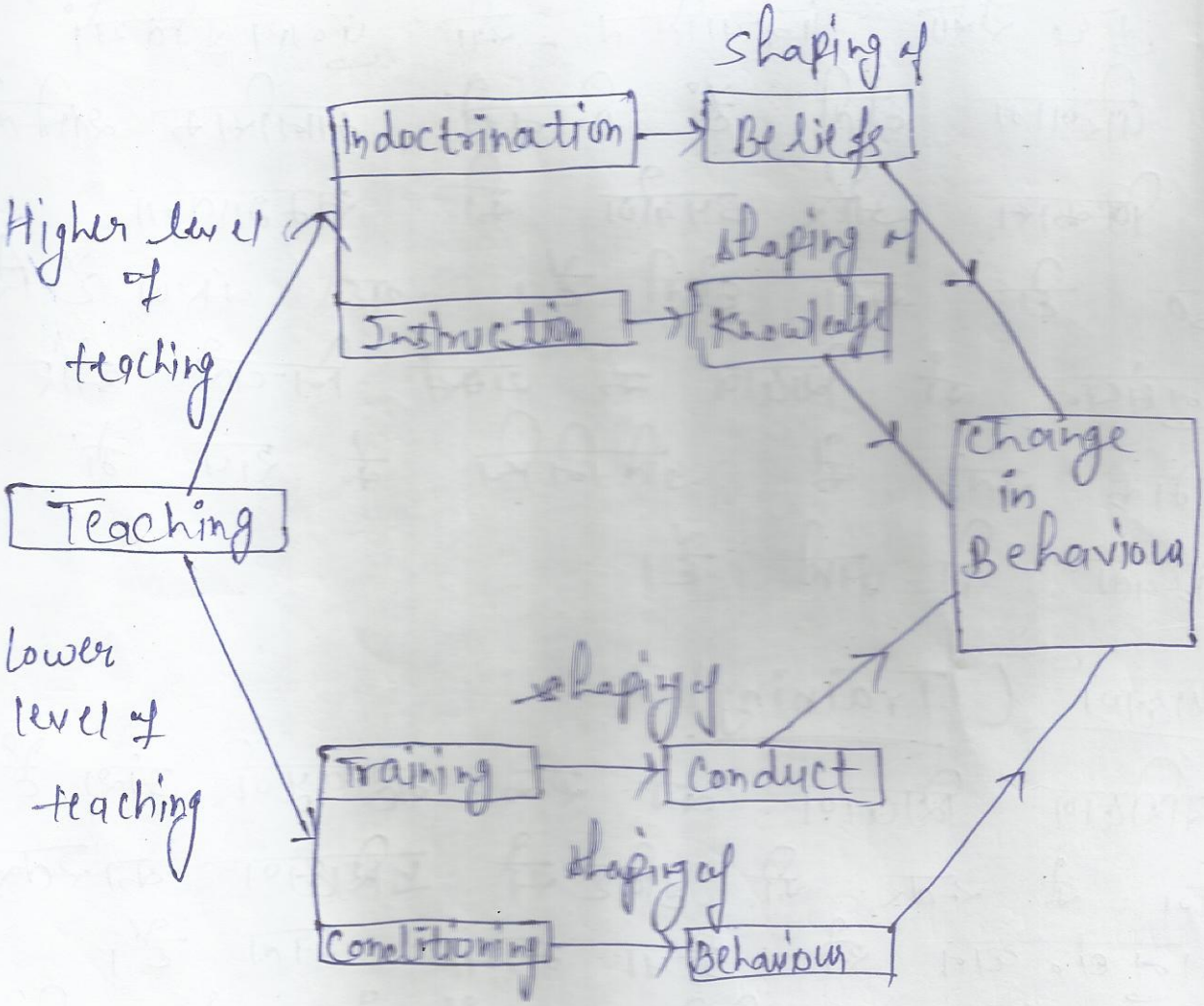

यहाँ ऊँचे higher and lower levels of teaching की बात कही गई है। मानसिक शक्तियों का विकास तथा बुद्धि और विवेक ही कुछ बातें ऐसी हैं जो मानव को पशु-पक्षियों से श्रेष्ठ बनाती हैं।

अनुबन्धन (Conditioning) → जब किसी कुत्ते या बिल्ली को किसी आदेश जैसे घंटी की आवाज पर पंजा उठाना आदि के लिए शिक्षा दी जाती है तो इस प्रकार के शिक्षण को अनुबन्धन कहते हैं। आदतें व्यवहार की कुछ ऐसी यंत्रचालित सी पुनरावृत्तियों का परिणाम होती हैं जिनमें मानसिक शक्तियों के विकास और उपयोग की सम्भावना बहुत ही कम होती है। यही कारण है कि अनुबंधन को शिक्षण के सबसे निचले और प्राथमिक स्तर के प्रतिनिधि के रूप में मान्यता दी जाती है।

प्रशिक्षण (Training) →

प्रशिक्षण शिक्षण का एक महत्वपूर्ण अंश है। शिक्षण के स्तर की दृष्टि से प्रशिक्षण का स्तर अनुबन्धन से ऊँचा माना जाता है। प्रशिक्षण के द्वारा विभिन्न कौशलों को अर्जित करने और चरित्र निर्माण। अथवा व्यवहार को वांछनीय बनाने में सहायता मिलती है।

किसी व्यक्ति को कौशलों का प्रशिक्षण देकर अच्छा मिस्त्री बनाया जा सकता है तथा ऐसा सरकस में भी हो सकता है

सरकस में तथा किसी व्यक्ति को मिस्त्री बनाने के लिए दिया गया प्रशिक्षण ही उसे प्रशिक्षित कराएगा। ऐसे में उस व्यक्ति को प्रशिक्षित कहा जा सकता है But उसे शिक्षित / या शिक्षण नहीं कह जा सकता।

Teaching	प्रशिक्षण (Training)
1) व्यक्ति की क्षमताओं का विकास होता है।	1) योग्यताओं का विकास होता है।
2) Broad area	2) Bounded area
3) long time	3) short time days / two months / years /
4) घर, स्कूल, कॉलेज university, धार्मिक संस्थाओं में दिया जा सकता है।	4) केवल प्रशिक्षण संस्थानों में ही दिया जा सकता है।
5) Aims of teaching सम्पूर्ण विकास overall development	5) शिक्षण का एक part है प्रशिक्षण

अनुदेशन (Instruction) :→

Dr. R.A. Sharma अनुसार – " अनुदेशन किन्हीं उद्देश्य के प्रति सीखने वालों को प्रभावित करने की प्रक्रिया है। "

International dictionary के according अनुदेशन को शिक्षण के साथ -2 प्रयोग किया जा सकता है।

शिक्षण हर अवस्था में एक बड़ा Concept है But अनुदेशन उसका एक छोटा -सा हिस्सा है। अनुदेशन जहाँ व्यवहार के ज्ञानात्मक पक्ष से ही सम्बन्ध रखता है वहाँ शिक्षण व्यवहार के ज्ञानात्मक के साथ -2 भावात्मक पक्ष के साथ -2 व्यक्तित्व के सामंजस्य के विकास पर अपनी दृष्टि रखता है।

शिक्षण (Teaching)	अनुदेशन (Instruction)
1) औपचारिक और अनौपचारिक दोनों तरह का हो सकता है।	1) always औपचारिक
2) व्यवहार में परिवर्तन लाना।	2) शिक्षण का एक भाग है।
3) व्यक्तिगत क्षमताओं का विकास	3) किसी विषय में ज्ञान प्रदान करना।
4) शिक्षण किसी भी जगह हो सकता है eg→ school college, University etc.	5) Generally done in classrooms only.

Teaching	Instruction
5) No ending	5) ending in classrooms.
6) Unlimiting curriculum.	6) limited curriculum.
7) teaching can be Natural and artificial both.	7) Instruction can be artificial only.
8) Teaching can follow rules or not (depend)	8) Instruction can be follow some rule always

प्रतिपादन (Indoctrination) :→

निश्चित विचारों को बनाने की प्रक्रिया है। जो विचार लगातार सीखने वाले के मस्तिष्क में डाले जाते हैं, वे उनके विश्वसनीय बन जाते हैं। विचार मस्तिष्क में गहरी जड़ों के रूप में बिठा दिये जाते हैं। जो कभी काफी समय बितने के बाद नहीं बदल सकते हैं अनुबन्धन को शिक्षण का प्रथम स्तर है वहीं पर प्रतिपादन को शिक्षण का सर्वोत्तम शिखर माना जाता है।

शिक्षा (Teaching)	प्रतिपादन (Indoctrination)
1) Broad Area	1) Narrow Area
2) use many methods	2) Generally uses भाषण विधि
3) बालक केन्द्रित	3) अंधविश्वासों पर केन्द्रित होती है।
4) बालक को ज्यादा महत्व दिया जाता है।	4) अध्यापक को महत्व दिया जाता है।
5) long time process	5) short time process
6) बालक को सीखने में स्वतन्त्रता दिया जाता है।	6) बालक को स्वतन्त्रता नहीं दी जाती
7) सामाजिक अनुशासन पर जोर दिया जाता है।	7) प्रतिपादन में अनुशासन कठोर होता है।

Level of Teaching

1) स्मृति स्तर (Memory level)
2) बोध स्तर (Understanding level)
3) चिंतन स्तर (Reflective level)

स्मृति स्तर (Memory level)

स्मृति स्तर में ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न की जाती हैं, जिससे छात्र पढ़ाई की विषय-वस्तु (Content) आत्मसात कर सकें। इस स्तर पर प्रत्यास्मरण प्रक्रिया पर जोर दिया जाता है।

स्मृति शिक्षण में संकेत अधिगम (Signal learning), शृंखला अधिगम (Chain learning) पर महत्व दिया जाता है।

शिक्षण के तीनों स्तरों का तुलनात्मक स्थान हो सकता है -

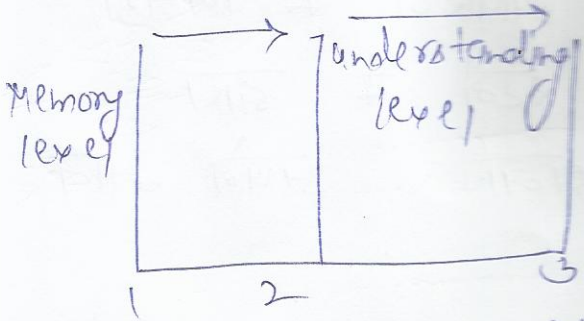

शिक्षण के स्तरों में Memory level को lower position तथा understanding level को intermediate stage and Reflective level को Higher level कहा गया है।

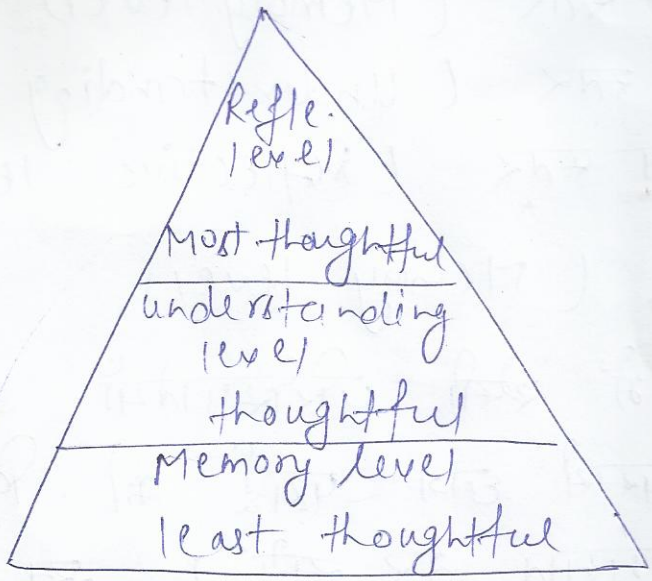

Comparative study of Teaching levels

स्मृति स्तर का शिक्षण छात्रों को रटकर याद रखने की क्षमता के प्रयोग तथा उसका अभ्यास करने में ही लगा रहता है।

गणित की समस्याओं को हल करना, पहाड़े याद करना; यौगिकों के सूत्र तथा रासायनिक सूत्र याद करना, क्रियाओं के नाम, संकेत, सूत्र तथा समीकरण, मुहावरे, लोकोक्तियाँ, अर्थ, व्याकरण के नियम आदि बहुत सी बातों को रटने के द्वारा अपनी स्मृति का अंग बनाकर अपने ज्ञान भंडार में वृद्धि करते हैं।

मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त और विचार

(1) मानसिक अनुशासन | मानसिक शक्तियों का सिद्धांत
Theory of mental Faculty / Mental Discipline →

शिक्षण में स्मरण शक्ति के प्रयोग और विकास पर ही पूरा - पूरा बल दिया जाता है।

(2) हरबर्ट के संचित ज्ञान सम्बन्धी सिद्धांत :-
Herbartian Appreciation Mass Theory →

स्मृति की सहायता से ज्ञान का संचय करके मस्तिष्क के भण्डार में वृद्धि करना शिक्षा का main उद्देश्य है।

(3) थॉर्नडाइक के संयोजनवाद :-
Thorndike's Connectionism —

स्मृति के माध्यम से stimulus (उद्दीपक) और Response (अनुक्रिया) में उचित सम्बन्ध स्थापित किया जाता है।

(4) अनुबन्धन सिद्धांत (Theory of Conditioning) →

शिक्षण साहचर्य व संयोजन - अभ्यास द्वारा महज एक आदत के रूप में बदल जाता है, नियम और सूत्र का आवर्तन प्रयोग करने से इस तरह कंठस्थ हो जाते हैं कि उन्हें प्रायःस्मरण करने में कोई कठिनाई नहीं महसूस होती।

उद्देश्य (objective) →

ज्ञानात्मक उद्देश्यों की पूर्ति करना।
ज्ञान को कंठस्थ करने, स्मृति में संचित रखने और आवश्यकतानुसार प्रस्तुत करना ही स्मृति शिक्षण का उद्देश्य माना जाता है।

विषयवस्तु की प्रकृति और उसका प्रस्तुतीकरण →
Nature of subject matter & its presentation →

विषयवस्तु की प्रकृति विषय केन्द्रित है।
विषय सामग्री को पूरी तरह से व्यवस्थित एवं नियोजित करके क्रमबद्ध रूप से छात्रों के सामने उसको प्रस्तुत करना इस तरह कि वे इसको याद करके आसानी से इसका प्रत्यास्मरण कर सकें।

अध्यापक की भूमिका Role of teacher। →

अध्यापक की भूमिका प्रधान तथा विद्यार्थी की भूमिका गौण होती है।

विद्यार्थी की भूमिका :- → अध्यापक की तुलना में विद्यार्थी की भूमिका न के ही बराबर होती है। श्रोता सिर्फ निष्क्रियात्मक तथा मूकदर्शक की ही भूमिका निभा पाता है

अभिप्रेरणा की प्रकृति (Nature of Motivation) →

अभिप्रेरणा की प्रकृति बाह्य (Extrinsic) होती है, आंतरिक नहीं। विद्यार्थी अपनी मर्जी से नहीं बल्कि वह सजा, डर, लालच, Certificate, अगली कक्षा में जाने के ही लालच से सूचनाओं को कंठस्थ करने में लगे रहते हैं।

प्रयुक्त विधियां (The ~~meth~~ Methods Employed) →

प्रयुक्त विधियाँ पूरी तरह से शिक्षक केन्द्रित तथा विषय केन्द्रित ही होती हैं, विद्यार्थी या किसी परिस्थिति पर केन्द्रित नहीं होती। eg→ lecture method, Text book method, विवरण विधि, Inductive, deductive, synthetic methods..

मूल्यांकन पद्धतियाँ (Tuting devices used) →

निबंधात्मक, लघु - उत्तरात्मक, वस्तुपरक परीक्षाओं का उपयोग करके विद्यार्थियों की प्रत्यास्मरण तथा अभिज्ञान योग्यता की जाँच की जाती है।

स्मृति शिक्षण स्तर के गुण - दोष :→
Merits & Demerits →

(1) छोटी कक्षाओं व छोटे बच्चों के लिए उपयोगी है।

(2) Maths के सूत्र, molecules / atoms के physical name (Chemical names), इतिहास की घटनायें, पहाड़े, संख्यात्मक ज्ञान आसानी से दे सकता है।

(3) स्मृति शिक्षण के Base पर ही बोध व चिंतन स्तर का ज्ञान में वृद्धि हो सकती है।

(4) सुव्यवस्थित व क्रमबद्ध ज्ञान स्मृति स्तर में ही दिया जाता है।

अध्यापक को अपने लक्ष्य की प्राप्ति में पूरी सहायता मिलती है।

Demerits :→

Demerits :→

1) मानसिक शक्तियों तथा विचार प्रक्रिया के उपयोग एवं विकास की दृष्टि से स्मृति स्तर शिक्षण का निम्नतम स्तर है। यहाँ पर समझना न का ही बराबर माना जाता है।

(2) स्मृति शिक्षण का रटा ज्ञान वास्तविक जीवन की परिस्थितियों के अनुपयोगी व निरर्थक ही सिद्ध होता है। eg→ रट कर याद किया गया क्षेत्र का फार्मूला किसी बड़े कमरे के क्षेत्रफल में use नहीं हो सकता, physics के ckt याद कर लेने से real life में ckt नहीं बना सकते।

(3) रटा हुए ज्ञान से सिर्फ written परीक्षा में पास हुआ जा सकता है। लेकिन मौखिक परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो सकते।

(4) स्मृति स्तर पर बच्चों की रुचि का कोई ~~क~~ महत्व नहीं होता। सिर्फ भय / पुरस्कार का ही महत्व होता है।

(5) स्मृति स्तर अध्यापक केन्द्रित होने से छात्र निष्क्रिय व नीरस - सा महसूस करता है।

बोध स्तर का शिक्षण
(Teaching at Understanding level)

बोध स्तर का ज्ञान केवल रटन्त पद्धति पर आधारित न होकर सामान्यीकरण तथा सिद्धान्तों को ग्रहण करने में आगे होता है। बोध का अर्थ होता है समझना।

eg → 2x3 का वही अर्थ है जो 3x2 का है। पहाड़ों को याद करने के बाद use करके देखना।

अंतर्निहित मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त तथा विचार →

(1) हरबर्ट का संचित ज्ञान सम्बन्धी सिद्धान्त तथा पंच पदीय शिक्षण-अधिगम →
five steps of Teaching learning →

(i) Preparation (तैयारी) → पूर्व ज्ञान की जाँच करना तथा नवीन ज्ञान को ग्रहण करने की आवश्यकता पर जोर देना।

(ii) Presentation (प्रस्तुतीकरण) →
नवीन ज्ञान को पूर्व ज्ञान से ~~सम्~~ सम्बन्धित करते हुए सुव्यवस्थित तथा क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करना।

(iii) & (iv) Comparision & Generalisation →
तुलना – सामान्यीकरण) →

प्रस्तुत विषय सामग्री में समान तथ्यों की खोज करने तथा उनको नियम एवं सिद्धान्तों के रूप में सामान्यीकरण कराने की चेष्टा करना।

(v) Application प्रयोग करना → नियम, तथ्यों व ज्ञान का व्यावहारिक जीवन में प्रयोग करना।

(2) Theory of Insight or Gestalt field Theory →
गैस्टाल्टवादी सूझ-बूझ सिद्धान्त :→

(i) पहले विषय सामग्री का अध्ययन करना
(ii) तथ्यों में समानता (difference) देखना
(iii) सामान्य सूझ-बूझ विकसित करना जो व्यावहारिक जीवन में काम आये।

उद्देश्य (objective) → प्राप्त ज्ञान को व्यावहारिक रूप देना।

विषयवस्तु की प्रकृति व उसका प्रस्तुतीकरण →
जो कुछ पढ़ाया जाये उसको पूर्व – अनुभवों व ज्ञान से जोड़कर इस तरह से Present करना ताकि भविष्य में use हो सके

अध्यापक की भूमिका (Role of teacher) →

same as memory level but different slightly

Teacher का extra परिश्रम रटे हुए ज्ञान का बोध भी कराना पड़ता है।

विद्यार्थी की भूमिका :→ विद्यार्थी की भूमिका निष्क्रिय व महत्वहीन न होकर सक्रिय / सजग रहती है। लेकिन नियंत्रण अध्यापक के पास ही होता है। अपने आप आगे बढ़कर ज्ञान प्राप्त करना / आलोचना करना / वाद - विवाद करना आदि क्रियायें नहीं होती।

प्रयुक्त विधियाँ → Inductive - deduction, Analytic - synthetic method का विश्लेषण संश्लेषण संयुक्त प्रयोग किया जाता है।

मूल्यांकन पद्धतियाँ → मौखिक, लिखित तथा क्रियात्मक सभी परीक्षायें की आवश्यकता पड़ती है। वस्तुनिष्ठ व लघु - उत्तरात्मक में प्राथमिकता as comparsion to निबन्धात्मक.

Merits & Demerits of Understanding

Levels →

Merits → (1) बोध स्तर के शिक्षण द्वारा प्राप्त ज्ञान अधिक प्रभावपूर्ण व स्थायी होता है। प्राप्त ज्ञान का आवश्यकतानुसार use भी कर सकते हैं।

(2) प्राप्त ज्ञान का प्रयोग छात्र विद्यालय के बाहर की समस्यायें को solve करने में भी use कर सकता है।

(3) बोध स्तर का ज्ञान मानसिक शक्तियों के विकास व उपयोग में पर्याप्त अवसर प्रदान करता है।

(4) बोध स्तर का ज्ञान चिंतन स्तर के ज्ञान प्राप्त करने में काफी सहायक साबित हो सकता है।

(5) शैक्षणिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये जितना बोध स्तर का शिक्षण उपयोगी हो सकता है उतना किसी और इसरे स्तर का उपयोगी नहीं हो सकता है।

Demerits:-

(1) स्मृति स्तर की तरह बौद्ध स्तर का शिक्षण भी अध्यापक व विषय केन्द्रित ही रहता है विद्यार्थी व परिस्थिति केन्द्रित कम ही रहता है। अध्यापक के सिर्फ अनुमान लगा लेने से ही विद्यार्थी की गति व समझ नहीं बढ़ पाते हैं और न ही सामान्यीकरण समझ उत्पन्न हो पाती है।

(2) अभिप्रेरणा का स्रोत बाह्य होने के कारण लगन व जिज्ञासा कम ही दिखाई देती है। डर व पुरस्कार प्राप्ति के लिए ही लगन दिखाई देती है।

(3) बालकों को स्वतंत्र रूप से चिंतन मनन करने, आवश्यकतानुसार क्रियाशील होने रचनात्मक कार्य करने, सृजनात्मक व अनुसंधानात्मक शक्तियों का विकास करने तथा समस्या समाधान योग्यता को विकसित करने के लिए उचित माहौल नहीं मिल पाता है।

Teaching at the Reflective Level :-

चिंतन स्तर का शिक्षण :→

शिक्षण के उच्चतम स्तर को चिंतन स्तर का नाम दिया गया है। इस स्तर को सबसे अधिक विचारयुक्त माना जाता है। विद्यार्थियों की मानसिक शक्तियों तथा मौलिकता को अपने शिखर तक पहुँचाने का कार्य इसी स्तर के शिक्षण द्वारा भली-भाँति किया जा सकता है।

चिंतन स्तर का शिक्षण अपने वास्तविक रूप में शिक्षण - अधिगम के प्रति अपनाए गये आलोचनात्मक, समस्यात्मक तथा अनुसंधानात्मक दृष्टिकोण का ही प्रतिनिधित्व करता है।

अंतर्निहित मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त और विचार-

कुर्ट लेविन का अधिगम सम्बन्धी ज्ञानात्मक क्षेत्र सिद्धान्त (Cognitive field theory of learning) → इसका सिद्धान्त का दूसरा नाम लक्ष्य अन्तः दृष्टि सिद्धान्त (Goal Insight theory) भी है। यह सिद्धान्त तथ्यों के बिना सोचे समझे रटने की प्रवृत्ति के बिल्कुल विरुद्ध है। यह Principal सीखने को एक बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य समझता है, जिसकी सफलता के लिए विकसित मानसिक शक्तियों की आवश्यकता होती है।

उद्देश्य (objectives) →

1) पहले से सीखे हुये का चिंतन, मनन गहन अध्ययन करना।

2) गहन चिंतन के द्वारा पूर्व अर्जित तथ्यों एवं सामान्यीकृत सूझबूझ में परिवर्तन लाना तथा उसका सामान्यीकरण करना।

3) अपने प्रयत्नों से ज्ञान की खोज तथा समस्याओं का समाधान कर सकने की योग्यता विकसित करना।

विषयवस्तु की प्रकृति और उसका प्रस्तुतीकरण →

मुख्य रूप से यह मुख्य पहलुओं पर केन्द्रित होता है। Ist समस्यात्मक परिस्थिति उत्पन्न होना तथा समस्या से अवगत कराना (Problem raising) तथा दूसरा समस्या का समाधान ढूँढना (Problem solving).

अध्यापक की भूमिका :→ चिंतन स्तर के शिक्षण में

अध्यापक की भूमिका अधिनायकवादी न होकर जनतन्त्रात्मक (Democratic) होती है। उसका कार्य विद्यार्थियों को तथ्यों, सूचनाओं तथा सामान्यीकृत सूझबूझ से स्वयं अर्जित करने की योग्यता उत्पन्न करना है।

समस्यात्मक परिस्थितियाँ उत्पन्न करके समस्याओं के समाधान का रास्ता खोजने में विद्यार्थियों की उचित सहायता करना ही उसका मुख्य कार्य होता है। इस प्रकार इस स्तर का शिक्षण अन्य दोनों स्तरों की तुलना में अध्यापक से उसके कर्तव्य के निर्वाह के संदर्भ में काफी अधिक अपेक्षायें रखता है।

विद्यार्थी की भूमिका :- सभी दृष्टि से विद्यार्थी की भूमिका काफी उत्तरदायी और प्रधान होती है। विद्यार्थी को काफी सक्रिय और सजग भूमिका निभानी होती है।

अभिप्रेरणा की प्रकृति :- अभिप्रेरणा का स्तोत स्मृति और बोध स्तरों की तरह बाह्य न होकर आंतरिक होती है। किसी भी प्रकार की स्थिति से निपटने के लिये उनमें शिक्षण प्रक्रिया में जुट जाने से संबंधित आवश्यक रुचि और इच्छा अवश्य ही जाग्रत होगी जिससे समस्याओं का गहराई से मनन करने तथा समस्यायों को स्वयं के प्रयत्नों द्वारा हल करने में सहायता मिल सकती है।

प्रयुक्त विधियाँ :- Methods employed :-

विश्लेषण विधि (Analytic method),
खोज विधि (Discovery method),
समस्या समाधान विधि (Problem solving method)
आवंटन विधि (Assignment method)
एवं प्रयोजना विधि (Project method)

प्रयुक्त मूल्यांकन पद्धतियाँ :-

मूल्यांकन के लिये निबन्धात्मक तथा खुले उत्तर वाले (open end type) प्रश्नों का प्रयोग उचित रहता है। विद्यार्थियों के उत्तर पढ़ने के प्रयास से ही मूल्यांकन किया जा सकता है।

Merits & Demerits of Reflective level Teaching :-

Merits :- (1) चिंतन शिक्षण अध्यापक और विषय केन्द्रित न होकर विद्यार्थी केन्द्रित होती है।
(2) विद्यार्थियों की मानसिक शक्तियों का प्रयोग एवं विकसित होने के अवसर जितने अधिक और अच्छी तरह से चिंतन स्तर के शिक्षण में मिलता है उतना और कहीं नहीं मिलता।

(3) चिंतन स्तर में विद्यार्थियों को समस्याओं से अवगत कराना तथा उनका समाधान ढूढने की योग्यता विकसित करने का उद्देश्य ठीक ढंग से पूरा किया जाता है।

(4) चिंतन स्तर के शिक्षण द्वारा कक्षा का वातावरण सक्रिय, सजीव, प्रेरणादायक तथा जनतंत्रात्मक बनाने में सहायता मिलती है।

(5) चिंतन स्तर के शिक्षण में स्मृति तथा बोध स्तर का शिक्षण - अधिगम स्वाभाविक रूप से शामिल हो जाता है, क्योंकि तथ्यों के ज्ञान तथा बोध के अभाव में उनका चिंतन तथा मनन हो ही नहीं सकता।

(6) सुयोग्य नागरिकों का निर्माण जो बदलते हुये प्रगतिशील युग के अनुरूप सिद्ध हो सकें वैसा केवल चिंतन स्तर के शिक्षण द्वारा ही संभव है।

(7) चिंतन स्तर का शिक्षण सभी विषयों तथा प्रकरणों के शिक्षण - अधिगम के लिये प्रयुक्त किया जा सकता है।

Demerits :-

1) यह विधि उन विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त है जिनमें मानसिक क्षमताओं का विकास हो चुका होता है। छोटी कक्षाओं तथा छोटी आयु के विद्यार्थियों के लिये इस स्तर का शिक्षण अधिक उपयुक्त सिद्ध नहीं होता।

(2) चिंतन स्तर का शिक्षण में क्रमबद्ध तथा सुव्यवस्थित ज्ञान का अभाव रहता है।

(3) चिंतन स्तर के शिक्षण में विद्यार्थियों को जो खुला वातावरण मिलता है वह कई बार विद्यार्थियों के लिए दुरुपयोगी भी साबित हो सकता है।

(4) इस तरह का शिक्षण अनेक विषय के लिये उपयोगी है जिनमें आलोचनात्मक चिंतन, मंथन मनन एवं चिंतन, खोज विधि भी ठीक से उपयोग हो सके।

(5) व्यावहारिक परिस्थितियों के चलते योग्य, अनुभवी तथा विषय-विशेष से संबंधित अध्यापकों का मिलना कठिन हो जाता है। और इस अभाव में चिंतन स्तर के शिक्षण की सफलता की आशा नहीं की जा सकती।

शिक्षण सिद्धान्त
(Theories of Teaching)

शिक्षण (Teaching) → शिक्षण एक काफी महत्वपूर्ण तथा चुनौतीपूर्ण कार्य जिसे किसी अध्यापक द्वारा अपने विद्यार्थियों के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाने हेतु अपने हाथ में लिया जाता है।

सिद्धान्त (Theory) →
मूडे एवं हाट्ट - " किसी सिद्धान्त का प्रयोजन तथ्यों के बीच सम्बन्ध प्रदर्शित करना और उन्हें सार्थक ढंग से क्रमबद्धता देना होता है।"

शिक्षण सिद्धान्त तीन प्रश्नों के उत्तर देता है-

(1) शिक्षक किस प्रकार व्यवहार करते हैं?
How to teachers Behave
(2) वे ऐसा व्यवहार क्यों करते हैं?
why do they behave as they perform?
(3) उस व्यवहार का क्या प्रभाव होता है?
with what effect they perform?

ये तीन प्रश्न N.L. गेज़ (1964) के अनुसार दिये गये हैं।

अलग -2 विद्वानों की दी गई definitions के आधार पर ये कहा जा सकता है कि

"शिक्षण के सिद्धान्त एक प्रकार से मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के ज्ञान और सूझबूझ को शिक्षण क्षेत्र में प्रयुक्त करने में सहायक ऐसे सैद्धान्तिक आधार हैं जिनके माध्यम से शिक्षक विशेष के शिक्षण कौशलों, शिक्षक व्यवहार तथा कक्षा-कक्ष शिक्षण कार्यक्रम को यथेष्ट प्रभावपूर्ण बनाया जा सकता है।"

Theories of teaching → nature & characteristics
शिक्षण सिद्धान्त – प्रकृति एवं विशेषतायें →

(1) शिक्षण के सिद्धान्तों अधिगम कार्यों तथा प्रक्रिया के समुचित तार्किक विश्लेषण तथा उन्हें भलीभाँति संपादित करने से संबंधित उचित सूझबूझ की ही देन हैं।

(2) शिक्षण सिद्धान्तों की प्रकृति मुख्य रूप से सामाजिक ही मानी जाती है।

(3) शिक्षण सिद्धान्त शिक्षण के सुव्यवस्थित स्वरूप को हमारे सामने लाने में उपयोगी सिद्ध होता है।

(4) शिक्षण सिद्धान्त एक शिक्षक को अपने विद्यार्थियों के प्रति निभाए जाने वाले शिक्षण उत्तरदायित्वों तथा प्रतिबद्धता को पूरा करने में मदद करता है।

(5) शिक्षण सिद्धान्त किसी भी शिक्षण प्रक्रिया में उपयुक्त रूप से काम में लाने हेतु विधियों एवं तरीकों का वर्णन, व्याख्या, स्पष्टीकरण एवं औचित्यकरण स्थापित करने का प्रयत्न करता है।

(6) विद्यार्थियों को उचित ज्ञान कौशल और अभिवृत्तियों का अर्जन करने हेतु सहायता प्रदान में शिक्षण सिद्धान्त सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

(7) शिक्षण सिद्धान्तों को ऐसी जटिल प्रक्रिया माना जाता है जिसमें विविध प्रकार की शिक्षण गतिविधियों, कार्यों तथा बहुआयामी शिक्षक व्यवहार का समावेश पाया जाता है।

शिक्षण सिद्धान्त (Types of Teaching Theories)

अब तक जितने भी शिक्षण सिद्धान्त विकसित किये गये हैं उन्हें ठीक प्रकार से जानने एवं समझने के लिए इन्हें तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

(1) शिक्षण के औपचारिक सिद्धान्त :-
(Formal Theories of Teaching)

(2) शिक्षण के वर्णनात्मक सिद्धान्त
Descriptive theory of teaching

(3) शिक्षण के नियामक या मानक निर्धारण सिद्धान्त
(Normative theories of Teaching)

(1) Formal Theories of Teaching →

- माइयूटिक शिक्षण सिद्धान्त
- शिक्षण का सम्प्रेषण सिद्धान्त
- पारस्परिक पूछताछ सिद्धान्त
- शिक्षण का रचना सिद्धान्त

शिक्षण के जो औपचारिक सिद्धान्त हैं वो किसी न किसी प्रकार के सैद्धान्तिक विचार ज्ञान विज्ञान और दार्शनिक मान्यताओं पर टिके रहते हैं और शायद इसीलिये इन्हें शिक्षण के दार्शनिक सिद्धान्त (Philosophical theories of teaching) की संज्ञा भी दी जा सकती है।

(A) माइयूटिक शिक्षण सिद्धान्त :-
(Maieutic)

यह सिद्धान्त Teaching theories में सबसे पुराना दार्शनिक सिद्धान्त है. जिसका प्रतिपादन ग्रीक दार्शनिकों सुकरात व प्लेटो के विचारों व शिक्षण विधियों के Base पर हुआ है.

इसमें विवेकानन्द व गांधी की मान्यताओं 3
की भी झलक देखने को मिलती है।
यह सिद्धान्त यह मानता है कि बालक के भीतरी ज्ञान को बाहर लाने का कार्य शिक्षण के द्वारा ही किया जा सकता है। शिक्षण का कार्य इस भीतरी ज्ञान को फिर से बालक की स्मृति में लाना होता है। प्रत्येक बालक में कुछ जन्मजात योग्यतायें व क्षमतायें पाई जाती हैं। शिक्षक का कार्य सिर्फ इनको बाहर प्रकाश में लाना होता है। बालक में बाहर से कुछ भी नहीं डाला जाता बल्कि भीतर से बाहर ही निकाला जाता है।

शिक्षण का सम्प्रेषण सिद्धान्त :→
(B) (Communication theory of teaching) →
यह सिद्धान्त Maieutic के बिलकुल विपरीत मान्यता रखता है। जो कुछ बालक को पढ़ाया जाता है वह उसके भीतर नहीं बल्कि बाहर मौजूद रहता है। वह अध्यापक ही है जो बालकों को कुछ कहकर, दिखाकर अथवा करके उचित सम्प्रेषण तकनीक का प्रयोग करते हुए वांछित ज्ञान एवं कौशल करने का प्रयत्न करता है।

सम्प्रेषण की प्रक्रिया में संवेदना और प्रत्यक्षीकरण की ही प्रमुख भूमिका रहती है एक अच्छे communication के लिए हमेशा पुराने ज्ञान तथा अनुभवों से सम्बन्धित करने के प्रयत्न करने चाहिये। शिक्षण की प्रक्रिया में वंशानुक्रम व वातावरण दोनों ही तरह के कारकों व तत्वों को महत्व दिया जाना चाहिये।

(6) शिक्षण का रूपण सिद्धान्त :-
Moulding theory of Teaching :-
बालक के व्यवहार और व्यक्तित्व का एक विशेष तरह से रूपण (Moulding) और निरूपण (shaping) करने में वातावरण से जनित कारकों की अहम भूमिका होती है, शिक्षण एक ऐसा साधन है जो बालक के व्यवहार में संगठन करने के लिए Moulding & shaping को important मानता है, शिक्षण का पूरा दायित्व उचित अधिगम परिस्थितियों का संगठन करना है

(4) पारस्परिक पूछताछ सिद्धान्त

Mutual Inquiry Methods :-

इसके अनुसार बालक स्वभाव से ही जिज्ञासु होते हैं। पूछताछ और खोज का रास्ता अपनाकर ज्ञान का बेहतर अर्जन किया जा सकता है। इस तरह की अधिगम परिस्थितियों का आयोजन किया जाता है कि विद्यार्थियों को अध्यापक के बिना कोई ज्यादा सहायता लेते हुए अपने आप ज्ञान की खोज के अवसर मिल सकें।

शिक्षण - अधिगम एक ऐसा सोद्देश्य कार्य है। जिसमें विद्यार्थी व अध्यापक दोनों के सहयोग से आगे बढ़ता जाता है।

(5) शिक्षण की वर्णनात्मक विधियाँ :-

(Descriptive Theories of Teaching →

शिक्षण के वर्णनात्मक सिद्धान्त से तात्पर्य शिक्षण प्रक्रिया में निहित चरों की, उनके अन्तः सम्बन्धों तथा उनके द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका की प्रभावशीलता, व्याख्या तथा वर्णन करने का प्रयत्न करते हैं।

(A) Gagne's Hierarchical Theory of Instruction :→

गेगने का अनुदेशनात्मक सिद्धान्त :→

गेगने ने अधिगम का 8 प्रकारों का उल्लेख कर उन्हें सरल से जटिल क्रम में व्यवस्थित किया है- (Signal learning)

(i) संकेत अधिगम → जैसा और करते हैं वैसा ही करता है
निम्न स्तर।

(ii) उद्दीपक - अनुक्रिया अधिगम
Stimulus- Response learning→
किसी काम के बदले में कोई चीज मिले

(iii) श्रृंखला अधिगम (Chain learning) →
12 34 5 6 7   ABCDEF

(iv) शब्द साहचर्य अधिगम Verbal Association learning →
Angle- ~~A~~ uncle
Pattern- Plate

(v) विभेदात्मक अधिगम (Discriminating learning) →
म न , थ य, ब व,
लाल गुलाबी

(vi) संप्रत्यय अधिगम (Concept learning) →
अवधारणा।
चीज क्या होती है, बर्फ क्या होती है,
रसदार फल, गर्मी, पिघलना।

(vii) सिद्धान्त अधिगम (Rule learning) (नियम। →
गर्मी पाकर बर्फ पिघल जाती है।

(viii) समस्या समाधान (Problem solving) →
~~निम्न~~ स्तर
उच्च

अधिगम की घटनाएँ अथवा अवस्थायें

अधिगम की घटनायें / अवस्थायें		अनुदेशनात्मक घटनायें
अभिप्रेरणा अवस्था	आकांक्षा	(i) अभिप्रेरणा को सक्रिय करने हेतु विद्यार्थी को उद्देश्यों से अवगत कराना
बोध अवस्था	अवधान चयनित प्रत्यक्षीकरण	(ii) अवधान को निर्देशित करना
संप्राप्ति अवस्था	कोडिंग भंडारण प्रविष्टि	(iii) प्रत्यास्मरण के लिए ध्यान करना।
धारणा अवस्था	स्मृति भंडारण	(iv) अधिगम मार्गदर्शन प्रदान करना
प्रत्यास्मरण अवस्था	पुनः प्रस्तुतीकरण	(v) धारणा में बढ़ोत्तरी करना
सामान्यीकरण अवस्था	स्थानान्तरण	(vi) अधिगम स्थानान्तरण को बढ़ावा देना
निष्पादन अवस्था	अनुक्रिया करना	(vii) प्रतिपुष्टि प्रदान कर निष्पति को प्रकाश में लाना
प्रतिपुष्टि अवस्था	पुनर्बलन	

(b) Atkinson's Optimal Learning Theory of Instruction! →

अटकिन्सन का अधिकतम अधिगम अनुदेशन सिद्धान्त :-

शिक्षक को सबसे पहले अनुदेशनात्मक उद्देश्यों को निर्धारित करना चाहिये। इसके बाद निश्चित, स्पष्ट एवं व्यवहारजन्य शब्दावली में व्यक्त करने का प्रयत्न करना चाहिये। इनके बाद शिक्षक को यह तय करना चाहिये कि वह अपनी शिक्षण प्रक्रिया को किस प्रकार तथा किस रूप में चलाना पड़ेगा इसके बाद निर्धारित अनुदेशनात्मक उद्देश्यों की उपलब्धि के मापन में के सन्दर्भ में उचित मूल्यांकन तकनीकों को विकसित करने की बात पर भी विचार करना चाहिये।

(c) ब्रूनर का अनुदेशन सम्बन्धी संज्ञानात्मक सिद्धान्त (Bruner's Cognitive Theory of Instruction) :→

→ बालकों की ज्ञान प्राप्ति में सहायता करने के साथ-2 विद्यार्थियों को ज्ञान प्राप्ति का ढंग सीखने हेतु मार्गदर्शन व प्रशिक्षण दिया जाना चाहिये।

→ विद्यार्थियों की स्वाभाविक क्रियाओं तथा जिज्ञासा प्रवृत्ति का अधिक से अधिक प्रयोग उठाया जाना चाहिये। विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से सोचने, समझने और करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिये। बच्चों को रटने की प्रवृत्ति की बजाय Instruction देने वाली प्रवृत्ति की बात करनी चाहिये। विद्यार्थियों के अधिगम व्यवहार को सही ढंग से पुनर्बलित करने के प्रयत्न किये जाने चाहिये। ब्रूनर ने इस सिद्धान्त को वर्णनात्मक या उपचारात्मक होने के साथ-2 नियामक या मापक भी है।

ब्रूनर ने अनुदेशन सिद्धान्त में चार निम्न बातों का समावेश किया है—

(i) अधिगम हेतु तत्पर करना (Prepare for learning)

(ii) ज्ञान को आयोजित या संरचित करना (Structuring the knowledge)

(iii) अधिगम सामग्री का क्रमबद्ध प्रस्तुतीकरण (Sequencing of the presented material) →

(iv) उचित पुनर्बलन प्रदान करना (Providing due reinforcement) →

according to Bruner's अधिगम सामग्री को अच्छी तरह निर्धारित एवं संरचित किया जाना चाहिये ताकि इसके प्रस्तुतीकरण से विद्यार्थियों को इसे जानने, समझने तथा प्रयोग में लाने में आसानी हो।

(3) शिक्षण के नियामक या मानक निर्धारक सिद्धान्त → (Normative Theories of Teaching) →

सामान्य शिक्षण की सभी गतिविधियाँ परिस्थितियों में ही सम्पन्न होती हैं। शिक्षण का कार्य शिक्षण के नियामक या मानक निर्धारक सिद्धान्त के माध्यम से सुचारु रूप से सम्पन्न हो सकता है

(A) गेज का शिक्षण सम्बन्धी संज्ञानात्मक सिद्धान्त

(B) स्मान्स का शिक्षण व्यवहार सिद्धान्त

(C) मिगा का शिक्षण सम्बन्धी संज्ञानात्मक सिद्धान्त

(D) क्लार्क का शिक्षण सम्बन्धी सामान्य सिद्धान्त

(A) गेज का शिक्षण सम्बन्धी संज्ञानात्मक सिद्धान्त (Gage's Cognitive Theory of Teaching) →

acc. to Gage's शिक्षण कार्य का मुख्य प्रयोजन विद्यार्थियों को विषय सामग्री के सार्थक अधिगम या उन्नत बोध में सहायता

प्रदान करना है।
विद्यार्थी अपने उद्देश्य में तभी सफल हो सकते हैं जब उनके सामने अधिगम सामग्री का नियोजित एवं क्रमबद्ध प्रस्तुतीकरण किया जाये। शिक्षण के कार्य में अनेक गतिविधियों तथा क्रियाओं का समावेश होता है।

Eg→ शिक्षक द्वारा दार्शनिक, अभिप्रेरक, मार्गदर्शक, पर्यवेक्षक आदि के रूप में निभाई जाने वाली विशिष्ट भूमिका।
इसके अलावा संप्रत्यय अधिगम, समस्या समाधान आदि का भी प्रयोग किया जाता है।

(13) रयान्स का शिक्षक व्यवहार सिद्धान्त (Ryans Theory of Teacher Behaviour)→

यह सिद्धान्त शिक्षक व्यवहार सम्बन्धी उनकी मान्यताओं तथा विचारों पर आधारित है। शिक्षण में शिक्षक के शाब्दिक तथा अशाब्दिक व्यवहार से कक्षा - कक्षा में काफी कुछ प्रभावित होता है।

acc. to this,

→ शिक्षक का व्यवहार अध्यापक की व्यक्तिगत विशेषताओं तथा शिक्षण के समय उपलब्ध परिस्थितिजन्य कारकों पर निर्भर करता है।

→ शिक्षक के व्यवहार का निरीक्षण किया जा सकता है वांछित या अवांछित

अपनी इन्हीं मान्यताओं को आधार बनाते हुए रयान ने इस प्रक्रिया में निम्न बातों को लगाने की अपेक्षा करता है-

→ शिक्षकों को ऐसे प्रयास करने चाहियें जिससे कक्षा-कक्षा शिक्षण में अपने व्यवहार व व्यक्तिगत विशेषताओं से एक-एक हो सकें।

→ शिक्षण व्यवहार का निरीक्षण करने के लिए Flanders Interaction तथा action research का use किया जाना चाहिये।

→ शिक्षण - अधिगम परिस्थितियाँ भलीभाँति संरचित की जानी चाहिये ताकि उचित शिक्षक व्यवहार बनाये रखने में इनका उचित योगदान शिक्षकों को मिल सके

(C) मित्रा का शिक्षण सम्बन्धी मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त →

Mitra's Psychological Theory of Teaching

इसका प्रतिपादन NCERT के भूतपूर्व डायरेक्टर S.K. मित्रा ने किया है-

acc^n to this -

→ शिक्षण में औपचारिक अनुदेशन होने चाहियें लेकिन ऐसा नहीं है कि शिक्षण कक्षा - कक्षा या विद्यालय की चारदीवारी के बाहर नहीं हो सकता है।

→ शिक्षण - अधिगम प्रक्रिया में कम से कम दो व्यक्ति, एक अध्यापक IInd विद्यार्थी अवश्य चाहियें।

→ एक शिक्षक को अपने ~~व्यक्ति~~ व्यवहार को सार्थक बनाने के उचित प्रभाव होने चाहिये ताकि बाद में यह अपेक्षा बच्चों से भी की जा सके।

Acc^n to मित्रा चार गतिविधियाँ होनी चाहिये

i) शिक्षण कार्य का विश्लेषण

ii) विद्यार्थियों के प्रविष्टि व्यवहार का निदान

iii) शिक्षण उद्देश्यों का निर्धारण

iv) उपयुक्त शिक्षण विधियों, प्रविधियों तथा व्यूह रचनाओं का चयन एवं उपयोग।

(d) क्लार्क का शिक्षण सम्बन्धी सामान्य सिद्धांत → Clark's General Theory of Teaching →

इस सिद्धान्त को सामान्य सिद्धांत इसीलिये कहा जाता है क्योंकि इसकी प्रकृति, विशेषताओं तथा प्रयोजन में काफी सामान्यता देखने को मिलती है।

इसमें शिक्षण को एक विशिष्ट कार्य कार्यकी न देकर सामान्य प्रक्रिया कहा है।

सामान्य रूप से विभिन्न अवस्थाओं से सम्बन्धित प्रक्रिया में निहित सभी चरों को उचित महत्व देने का प्रयत्न किया जाता है।

इसमें उन सभी सामान्य व्यूह रचनाओं की चर्चा की जाती है जिन्हें एक आम अध्यापक द्वारा विभिन्न अधिगम परिस्थितियों में अपने विद्यार्थियों के साथ वांछित व्यवहार करने हेतु काम में लाया जाता है।

क्लार्क ने अपने सिद्धान्तों को तीन शीर्षकों में विभाजित करना चाहेंगे।

(1) शिक्षण का संप्रत्यय :→ (Concept of Teaching)→

(2) शिक्षण के चर (Variables of Teaching)

(i) स्वतंत्र चर (अध्यापक)

(ii) आश्रित चर (विद्यार्थी)

(iii) मध्यस्थ चर (शिक्षण अधिगम परिस्थितियाँ, पाठ्यक्रम, शिक्षण साधन तथा मूल्यांकन प्रविधियाँ etc)

(3) शिक्षण के स्तर (Levels of Teaching)→

(i) प्रथम स्तर में वास्तविक शिक्षण कार्य हेतु आवश्यक तैयारी का कार्य किया जाता है।

(ii) द्वितीय स्तर में शिक्षण का वास्तविक कार्य सम्पन्न होता है।

(iii) तृतीय स्तर पर शिक्षण के परिणामों का मापन एवं मूल्यांकन किया जाता है।

क्लार्क ने तीन स्तरों की भी चर्चा की है

(1) नियोजन स्तर

(2) क्रियान्वयन स्तर

(3) मूल्यांकन स्तर.